Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

डिजिटल प्रौद्योगिकी के आईने में साहित्य, समाज तथा संस्कृति

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभागाध्यक्ष सहयोगी प्रोफेसर
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय बदनापूर,
तह.बदनापुर,जि. जालना (महाराष्ट्र)
मो. न. 8669169236

नई डिजिटल प्रौद्योगिकियों के तीव्र विकास ने साहित्य, समाज और संस्कृति के अध्ययन को एक नए आयाम प्रदान किए हैं। आज डेटा पूलिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा इंटरनेट आधारित संसाधनों के माध्यम से ई-पुस्तकों, वीडियो, पॉडकास्ट, सिमुलेशन और डिजिटल गेम जैसी विविध शिक्षण सामग्रियाँ सहज रूप से उपलब्ध हो रही हैं। इन तकनीकों ने साहित्यिक अनुभव को अधिक समृद्ध, सुलभ और सहभागी बनाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक, वैयक्तिकृत और आकर्षक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल मंच साहित्यिक आयोजनों का प्रभावी विकल्प बनकर उभरे। इन माध्यमों ने साहित्यिक गतिविधियों की निरंतरता बनाए रखी और लेखक तथा पाठक के बीच की दूरी को काफी हद तक कम कर दिया। आज डिजिटल मंचों के कारण साहित्य और साहित्यकारों को व्यापक पहचान तथा वैश्विक पाठक वर्ग प्राप्त हो रहा है।

आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्य के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन ला सकती है। यह परिवर्तन केवल अंग्रेज़ी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को भी नई दिशा देगा। विषय चयन, सामग्री निर्माण, संपादन, अनुवाद, प्रकाशन तथा पाठकों तक पुस्तक पहुँचाने जैसी प्रत्येक प्रक्रिया में AI की भूमिका लगातार बढ़ रही है। परिणामस्वरूप साहित्य सृजन अधिक व्यवस्थित, तीव्र और व्यापक होता जा रहा है।

डिजिटल तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। शैक्षणिक संस्थान अब अधिक विद्यार्थियों तक विविध पाठ्यक्रमों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री को सरलता से पहुँचा पा रहे हैं। शिक्षण और अधिगम में सोशल मीडिया, मल्टीमीडिया संसाधन, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म तथा विभिन्न शैक्षिक सॉफ़्टवेयर का उपयोग बढ़ा है, जिसे व्यापक रूप से "डिजिटल शिक्षा" कहा जाता है। इससे साहित्य, समाज और संस्कृति का अध्ययन अधिक प्रभावी, व्यावहारिक तथा प्रक्रिया-आधारित बन गया है।

डिजिटल अध्ययन का उद्देश्य केवल जानकारी उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता और निर्णय लेने की योग्यता का विकास करना भी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल सहायक तकनीक नहीं रही, बल्कि स्वयं सृजनकर्ता के रूप में भी उभर रही है। इसी कारण "एआई साहित्य" अथवा "कृत्रिम साहित्य" जैसी नई साहित्यिक विधा का विकास हो रहा है।

मातृभाषाओं में शिक्षण सामग्री तैयार करने की प्रक्रिया भी AI के कारण अधिक सरल, तीव्र और प्रभावी हो गई है। भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारें स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर रही हैं। पिछले एक दशक में मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता और सटीकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। आज किसी भी भाषा में उपलब्ध पुस्तक को स्कैन कर कुछ ही मिनटों में हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवादित किया जा सकता है। भविष्य में यह तकनीक मानव अनुवाद के समकक्ष गुणवत्ता प्रदान करने में सक्षम हो सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता विश्व की प्रमुख भाषाओं के बीच ज्ञान और साहित्य के आदान-प्रदान को भी सशक्त बना रही है। मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ तथा रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, उपनिषद और पुराण जैसे भारतीय ज्ञानग्रंथ अब विश्वभर के पाठकों तक पहुँच सकते हैं। इसी प्रकार आयुर्वेद, योग और भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का वैश्विक प्रसार भी अधिक सशक्त हुआ है।

यूनेस्को के अनुसार विश्व की लगभग 7,200 भाषाओं में से लगभग आधी भाषाएँ इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त होने के खतरे में हैं। ऐसी स्थिति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रसार के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। डिजिटल समाज के अध्ययन में दो प्रमुख पहलुओं पर विशेष बल दिया जाता है। पहला, समाज पर डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव और दूसरा, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं में डिजिटल तकनीक का उपयोग। डिजिटल परिवर्तन ने सामाजिक संरचना, लोकतंत्र, संचार, रोजगार तथा आर्थिक व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। साथ ही, डिजिटल विभाजन, सामाजिक असमानता, सूचना तक असमान पहुँच, गोपनीयता, बायोमेट्रिक पहचान तथा इंटरनेट की उपलब्धता जैसे नए प्रश्न भी सामने आए हैं।

सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों ने साहित्य, संस्कृति और समाज के बीच संवाद को नई गति प्रदान की है। साहित्य में डिजिटल साक्षरता का महत्त्व निरंतर बढ़ रहा है। साहित्य अकादमी जैसी संस्थाओं की वेबसाइटें और डिजिटल पोर्टल विश्वभर के पाठकों को भारतीय साहित्य से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन चुके हैं। इस प्रकार डिजिटल प्रौद्योगिकी केवल साहित्य के संरक्षण और प्रसार का साधन नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के विकास का एक सशक्त आधार भी बन गई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में साहित्य, समाज तथा संस्कृति को बेहतर बनाने की क्षमता है, इसमे कोई संदेह की गुंजाइश नहीं है, परंतु यह मौजूदा विषयों की महत्ता को बदतर भी बना सकता है। उदाहरण के रूप में प्रौद्योगिकी सामाजिक पूर्वाग्रहों को प्रदर्शित कर सकती है, चाहे चेहरे की पहचान या निगरानी प्रणालियाँ लोगों को उनकी नस्ल के आधार पर पहचानें (जैसे कि वे गोरे हों या काले) या गणना करके निष्कर्ष निकालें कि पुरुष काम पर महिलाओं की तुलना में बेहतर क्यों करते हैं। इसके अलावा जब हम इन तकनीकों का अधिक उपयोग करते हैं, तो हम अधिक डिजिटल दुनिया बनाते हैं जो एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र की ओर ले जाते हैं जहां डेटा पर अधिक निर्भरता होती है, और हम केवल वही कर रहे हैं जो हम करना चाहते हैं - देखना, पढ़ना, सुनना, खरीदना, या उन व्यक्तियों से बातचीत करना जिनसे हम बात करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप ए.आई. हमारे डिजिटलचिह्नों के सहारे हमें स्वयं से बेहतर जानने लगी हैं। इसके अतिरिक्त, यह याद रखना चाहिए कि पर्याप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुरक्षा उपायों के अभाव में समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ सकती है।

भारत में 'मेक इन इंडिया' की सितंबर 2014 मे शुरुआत हुई। तब से आज तक आर्थिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक, तकनीकीऔर अनुसंधान के क्षेत्रों में जैसा सकारात्मक बदलाव देखा गया वैसा कभी नहीं हुआ।[6] भारत अपनी राजनीतिक संस्कृति मे भी बदलाव के नवीन तरीके अपना रहा है। संसदीय गतिविधियों को डिजिटल करने की दिशा में 'वन नेशन, वन एप्लीकेशन' और नेशनल ई-विधानपोर्टल इस दिशा में प्रमुख कदम हैभारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत 44 मिशन मोड परियोजनाओं में से यह भी एक है। इसके माध्यम से राज्यों में ज्ञान साझा करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने में मदद मिल रही है। NeVaयह एक एकीकृत और आपस में जुड़ा हुआ राष्ट्रीय पोर्टल है जो 'वन नेशन, वन एप्लिकेशन' को प्रदर्शित करता है। भविष्य में इससे न केवल विधान सभाओं बल्कि सभी लोगों को लाभ होगा।

नई डिजिटल प्रौद्योगिकियों के निरंतर विकास ने साहित्य, समाज और संस्कृति के अध्ययन की दिशा और स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), डेटा विश्लेषण तथा इंटरनेट आधारित संसाधनों ने ज्ञान के सृजन, संरक्षण और प्रसार की प्रक्रिया को पहले की अपेक्षा अधिक सुलभ, प्रभावी और गतिशील बना दिया है। वर्तमान समय में ई-पुस्तकें, डिजिटल पुस्तकालय, वीडियो व्याख्यान, पॉडकास्ट, सिमुलेशन, वर्चुअल प्लेटफ़ॉर्म तथा अन्य ऑनलाइन संसाधन साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के महत्त्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। इन तकनीकी साधनों ने न केवल शिक्षण प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक और रुचिकर बनाया है, बल्कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप वैयक्तिकृत अधिगम की संभावनाओं का भी विस्तार किया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों ने साहित्यिक गतिविधियों की निरंतरता बनाए रखने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। साहित्यिक गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, पुस्तक विमोचन, संगोष्ठियाँ तथा वेबिनार

ऑनलाइन माध्यमों से आयोजित होने लगे, जिससे लेखक, शोधकर्ता और पाठक भौगोलिक सीमाओं से परे एक-दूसरे से जुड़ सके। इस परिवर्तन ने साहित्य को वैश्विक स्तर पर नई पहचान प्रदान की तथा लेखक और पाठक के बीच प्रत्यक्ष संवाद को अधिक सशक्त बनाया।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बढ़ता प्रभाव साहित्य सृजन की पारंपरिक प्रक्रिया में भी परिवर्तन ला रहा है। विषय चयन, सामग्री निर्माण, संपादन, भाषा-संशोधन, अनुवाद, प्रकाशन तथा वितरण जैसे विभिन्न चरणों में AI का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। इससे साहित्यिक सृजन अधिक व्यवस्थित, त्वरित और व्यापक हुआ है। विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के साहित्य को डिजिटल मंचों के माध्यम से नई पहचान और व्यापक पाठक वर्ग प्राप्त हो रहा है, जिससे भाषाई विविधता के संरक्षण को भी बल मिल रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाया है। ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल सामग्री, सोशल मीडिया, मल्टीमीडिया संसाधन तथा ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है। डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक दृष्टि, रचनात्मकता तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना भी है।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल सहायक उपकरण नहीं रह गई है, बल्कि वह ज्ञान-सृजन की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार के रूप में उभर रही है। इसी कारण "एआई साहित्य" अथवा "कृत्रिम साहित्य" जैसी नई साहित्यिक अवधारणाएँ विकसित हो रही हैं। AI के माध्यम से मातृभाषाओं में शिक्षण सामग्री, अध्ययन सामग्री तथा संदर्भ ग्रंथों का निर्माण पहले की तुलना में अधिक तीव्र और सरल हो गया है। भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारें भी भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री विकसित करने के लिए AI आधारित तकनीकों का उपयोग कर रही हैं।

मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पिछले एक दशक में अनुवाद तकनीकों की गुणवत्ता और सटीकता में अत्यधिक सुधार हुआ है। आज किसी भी भाषा में उपलब्ध पुस्तक या दस्तावेज़ का अल्प समय में हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद संभव हो गया है। भविष्य में यह तकनीक मानव अनुवाद के समकक्ष गुणवत्ता प्रदान करने में सक्षम हो सकती है, जिससे ज्ञान का वैश्विक आदान-प्रदान और अधिक सशक्त होगा।

डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ अब विश्वभर के पाठकों तक आसानी से पहुँच रही हैं। इसी प्रकार रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, उपनिषद, पुराण,

आयुर्वेद तथा योग जैसे भारतीय ज्ञान-स्रोतों का डिजिटल रूपांतरण भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है।

यूनेस्को के अनुसार विश्व की लगभग आधी भाषाएँ इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त होने के संकट का सामना कर सकती हैं। ऐसी परिस्थिति में डिजिटल प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषाओं के संरक्षण, दस्तावेजीकरण, डिजिटलीकरण तथा पुनर्जीवन के प्रभावी साधन बनकर उभर रही हैं।

डिजिटल समाज के अध्ययन में मुख्यतः दो आयाम महत्त्वपूर्ण हैं— पहला, समाज पर डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव और दूसरा, सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक संस्थाओं में डिजिटल तकनीक का उपयोग। डिजिटल परिवर्तन ने संचार व्यवस्था, सामाजिक संबंधों, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, रोजगार के स्वरूप तथा आर्थिक गतिविधियों में व्यापक बदलाव किए हैं। इसके साथ ही डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा, गोपनीयता, डेटा संरक्षण, सूचना की विश्वसनीयता तथा तकनीकी असमानता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल मंचों ने साहित्य, समाज और संस्कृति के बीच संवाद को अधिक व्यापक और प्रभावशाली बनाया है। साहित्य अकादमी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थानों के डिजिटल पोर्टल और वेबसाइटें भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस प्रकार डिजिटल प्रौद्योगिकी केवल साहित्य के संरक्षण और प्रसार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति के सतत विकास, ज्ञान के लोकतंत्रीकरण तथा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का एक सशक्त आधार भी बन चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- शर्मा, रमेश (2023). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, रामविलास. आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीक। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2021।
- मिश्र, रामदरश. हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005.
- नेहरू युवा केंद्र संगठन. भारतीय युवाओं में पाठन संस्कृति की प्रवृत्ति। नई दिल्ली, 2015.
- गुप्ता, अंजली (2022). डिजिटल युग में हिंदी साहित्य। मुंबई: वाणी प्रकाशन।